21वाँ गाजरघास जागरूकता सप्ताह

16–22 अगस्त, 2026

गाजरघास (*पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस*) जिसे आमतौर पर कांग्रेस घास, सफेद टोपी, असाड़ी, गजरी, चटक चांदनी आदि नामों से जाना जाता है, एक विदेशी आक्रामक खरपतवार है। भारत में पहली बार 1950 के दशक में दृष्टिगोचर होने के बाद यह विदेशी खरपतवार रेल्वे ट्रेक, सड़कों के किनारे, बंजर भूमि, उद्यान आदि सहित लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर फसलीय और गैरफसलीय क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है।

यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है जिसकी लम्बाई 1.5 से 2.0 मीटर तक होती है। यह मुख्यतः बीजों से फैलता है। यह एक विपुल बीज उत्पादक है और इसमें लगभग 25,000 से 50,000 बीज/पौधा पैदा करने की क्षमता होती है। बीज अपने कम वजन के कारण हवा, पानी और मानवीय गतिविधियों द्वारा आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाते है।

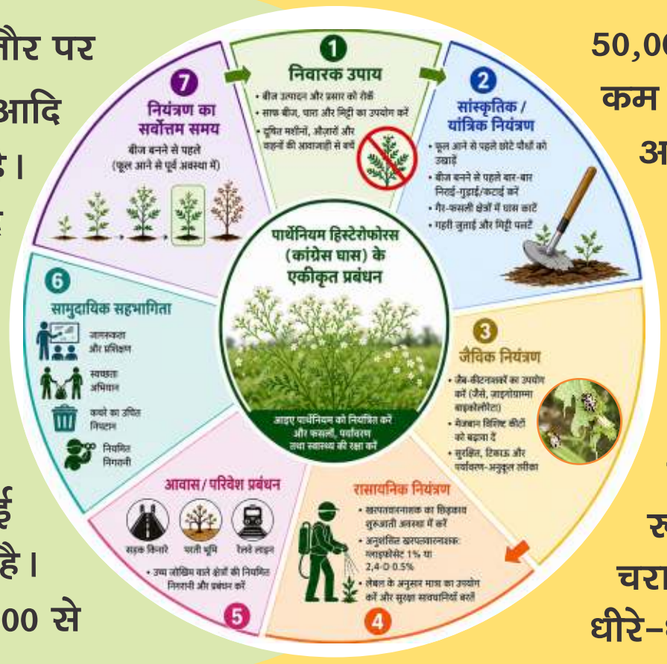

गाजरघास को सबसे अधिक खतरनाक खरपतवारों में गिना जाता है क्योकि यह मनुष्यों और पशुओं में त्वचा रोग (डरमेटाइटिस), अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। इसके सेवन से पशुओं में अत्यधिक लार और दस्त के साथ मुंह में छाले हो जाते हैं। स्वादहीन होने के कारण इसका उपयोग पशुओं के चारे के रूप में नही किया जा सकता है, साथ ही घास के मैदानों, चरागाहों और वन क्षेत्रों में इसके फैलने से चारे की उपलब्धता धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

नियंत्रण के उपाय

- चूंकि गाजरघास एक जन मानस की समस्या है, इसलिए इसे नियंत्रित करने के लिए किसानों, नगर पालिकाओं, कॉलोनी वासियों, गैर सरकारी संगठनों, स्कूली बच्चों आदि सहित समाज के सभी वर्गों के द्वारा सामुदायिक पहल की आवश्यकता है ताकि वे अपने आसपास को गाजरघास से मुक्त रख सकें।
- गाजरघास के दुष्प्रभाव एवं इसके प्रबंधन के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए बैठकें, प्रशिक्षण, प्रदर्शन आदि आयोजित करें।
- फूल आने से पहले इस खरपतवार को उखाड़कर कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट बना लें।
- गाजरघास को विस्थापित करने के लिए चकोड़ा, गेंदा जैसे स्व-स्थायी प्रतिस्पर्धी पौधों की प्रजातियों के बीज का छिड़काव करें।
- अकृषित क्षेत्रों में संपूर्ण वनस्पति नियंत्रण के लिए ग्लाइफोसेट (1.0–1.5%) जैसे शाकनाशी का छिड़काव करें और मिश्रित वनस्पति में गाजरघास के नियंत्रण हेतु मेट्रिब्यूजिन (0.3–0.5%) या 2,4-डी (1.0–1.5%) का छिड़काव उसमें फूल आने से पहले करें, ताकि घास कुल के पौधों को बचाया जा सकें। फसलों में शाकनाशियों के प्रयोग से पहले खरपतवार वैज्ञानिक/विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य कर लेना चाहिए।
- जुलाई–अगस्त के दौरान गाजरघास संक्रमित क्षेत्रों में जैविक कीट *जाइगोग्रामा बाइकोलोराटा* (मेक्सिकन बीटल)को छोड़ें।

अपील

गाजरघास विश्व के सर्वाधिक आक्रामक खरपतवारों में से एक के रूप में उभरी है, जो कृषि उत्पादकता, जैव विविधता तथा मनुष्यों एवं पशुओं दोनों के स्वास्थ्य को गंभीर क्षति पहुँचा रही है। भारत में इसने चिंताजनक स्वरूप धारण कर लिया है तथा यह फसली एवं गैर-फसली क्षेत्रों के साथ-साथ शहरी परिदृश्यों, सड़कों एवं रेल पटरियों के किनारों तथा संस्थागत परिसरों में भी तेजी से फैल रही है। खेत बचाओ अभियान, 2026 के दौरान भी इसकी व्यापक उपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी गई, जहाँ कृषि भूमि पर इसके अतिक्रमण से हमारे किसानों को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा प्रतिवर्ष 16 से 22 अगस्त तक गाजरघास जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है, जिसका उद्देश्य इस आक्रामक खरपतवार के प्रबंधन एवं उन्मूलन के प्रति जनसामान्य को जागरूक एवं प्रेरित करना है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, मनुष्य, पशुओं, पौधों तथा पर्यावरण का स्वास्थ्य परस्पर गहराई से जुड़ा हुआ है। "वन हेल्थ" (एक स्वास्थ्य) दृष्टिकोण इसी अंतर्निर्भरता को रेखांकित करता है और पारिस्थितिक एवं स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के समाधान हेतु समेकित प्रयासों का आह्वान करता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो गाजरघास का उन्मूलन पारिस्थितिक संतुलन एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस समस्या के समाधान हेतु प्रभावी प्रबंधन रणनीतियाँ विकसित करने एवं इस खरपतवार से उत्पन्न गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति जनसामान्य को जागरूक करने के लिए विभिन्न विषय-क्षेत्रों के विशेषज्ञों के समन्वित प्रयास अपेक्षित हैं। भा.कृ.अनु.प.- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर ने गाजरघास प्रबंधन हेतु प्रभावी जैविक नियंत्रण तकनीकें सफलतापूर्वक विकसित एवं प्रसारित की हैं तथा यह निदेशालय इनके व्यापक एवं टिकाऊ उपयोग को बढ़ावा देने हेतु प्रतिबद्ध है।

21वाँ गाजरघास जागरूकता सप्ताह 16 से 22 अगस्त, 2026 तक देशभर में मनाया जाएगा। यह पहल स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्यों से भी घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। अतः मैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के समस्त संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों तथा कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रत्येक कार्मिक से अपील करता हूँ कि वे स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत एक प्रमुख गतिविधि के रूप में इस अभियान में पूर्ण मनोयोग से सहभागिता करें तथा यह सुनिश्चित करें कि उनके परिसर शीघ्रातिशीघ्र गाजरघास मुक्त हो जाएँ।

(एम.एल. जाट)
सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग
एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

गाजरघास मिटाना है। स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं जैव-विविधता बचाना है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : डॉ. जे.एस. मिश्र, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर - 482004 (म.प्र.)
फोन : (0761) 2353934, वेबसाइट : https://dwr.org.in/

प्रस्तुतकर्ता: अर्चना अनोखे, दीक्षा एम.जी., दीपक पवार, जे.के. सोनी,सहदेव आई.के. एवं पी.के. सिंह